वृद्ध एवं प्रतापी पितामह भीष्म ने उसे हर्षित करते हुए सिंह-गर्जन के समान उच्च स्वर से शंखनाद किया।।१२।।

तात्पर्य

कुरुवंश के वयोवृद्ध पितामह भीष्म पौत्र दुर्योधन का मनोभाव जान गए। अतः उसके लिए स्वाभाविक दया से प्रेरित होकर उन्होंने अपनी सिंहोचित स्थिति के अनुरूप तुमुल शंखनाद करके उसे आह्लादित करने का प्रयास किया। परोक्ष रूप में शंख की लाक्षणिकता से उन्होंने अपने निरुत्साह पौत्र दुर्योधन को सूचित किया कि युद्ध में उसकी विजय सर्वथा असम्भव है, क्योंकि परमेश्वर श्रीकृष्ण उसके शत्रुपक्ष में हैं। तथापि, युद्ध का संचालन उनका कर्तव्य है, जिसका वे पूर्ण निर्वाह करेंगे।

ततः शंखाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्।।१३।।

ततः=उसके अनन्तर; **शंखाः**=शंख; **च**=तथा; **भेर्यः**=नगारे; **च**=तथा; **पणवानक**=ढोल-मृदंग; **गोमुखाः**=गोमुख; **सहसा**=अकस्मात्; **एव**=ही; **अभ्यहन्यन्त**=एक साथ बज उठे; **सः**=वह; **शब्दः**=स्वर; **तुमुलः**=अति भयंकर; **अभवत्**=हुआ।

अनुवाद

इसके अनन्तर शंख, नगारे, ढोल, मृदंगादि सहसा एक ही साथ बज उठे; उनका वह स्वर अति भयंकर हुआ।।१३।।

ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ।
माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः।।१४।।

ततः=तत्पश्चात्; **श्वेतैः**=श्वेत; **हयैः**=घोड़ों से; **युक्ते**=युक्त; **महति**=महान्; **स्यन्दने**=रथ में; **स्थितौ**=विराजमान; **माधवः**=श्रीकृष्ण; **पाण्डवः**=पाण्डुपुत्र अर्जुन ने; **च**=तथा; **एव**=भी; **दिव्यौ**=दिव्य; **शंखौ**=शंख; **प्रदध्मतुः**=बजाये।

अनुवाद

दूसरी ओर, श्वेत घोड़ों से युक्त महिमामय रथ पर विराजमान भगवान् श्रीकृष्ण एवं अर्जुन ने अपने दिव्य शंखों का वादन किया।।१४।।

तात्पर्य

भीष्मदेव द्वारा बजाये गये शंख की अपेक्षा भगवान् श्रीकृष्ण एवं अर्जुन के शंखों को **दिव्य** कहा गया है। अलौकिक शंखों के नाद से स्पष्ट है कि विपक्षी कौरव दल की विजय की कोई सम्भावना नहीं, क्योंकि भगवान् श्रीकृष्ण ने पाण्डवों का पक्ष ग्रहण किया है। **जयस्तुपाण्डुपुत्राणां येषां पक्षे जनार्दनः**—जय सदा पाण्डव जैसे धर्मात्माओं का ही वरण करती है, क्योंकि उन्हें भगवान् श्रीकृष्ण का समाश्रय प्राप्त रहता है'। श्रीभगवान् जिस देश-काल में विराजमान रहते हैं, लक्ष्मी भी वहाँ अवश्य निवास करती है, क्योंकि वह अपने स्वामी की नित्य अनुगामिनी है।